

शेख़ फ़रीद – सबद ६०

फरीदा कोठे मंडप माड़ीआ एतु न लाए चितु ॥

सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८०

फरीदा कोठे मंडप माड़ीआ एतु न लाए चितु ॥

मिटी पई अतोलवी कोइ न होसी मितु ॥५७॥

सार: भौतिक संरचनाओं और धन में भावनात्मक लगाव अक्सर सुरक्षा का भ्रम देता है लेकिन धीरे-धीरे यह हमारी पहचान को इन्हीं पर निर्भर कर देता है जिसे हम खो सकते हैं। हम अपने मूल्य को स्वामित्व, निर्माण या प्रदर्शन से आंकने लगते हैं और संपत्ति को स्थायित्व समझ बैठते हैं। जब परिस्थितियाँ बदलती हैं तब बेचैनी बढ़ जाती है क्योंकि आधार बाहरी था। संरचनाएँ शरीर को आश्रय दे सकती हैं और धन आराम प्रदान कर सकता है लेकिन दोनों ही आंतरिक स्वयं को स्थिर नहीं कर सकते। बड़ा खतरा चीज़ों को खोना नहीं बल्कि उन्हें बचाने की कोशिश में स्वयं को खोना है। सार यह है कि धन का उपयोग एक उपकरण के रूप में किया जाए न कि उस स्थान के रूप में जहाँ दिल रहता है।

फरीदा कोठे मंडप माड़ीआ एतु न लाए चितु ॥

फ़रीद कहते हैं कि अपने मन को घरों, महलों और हवेलियों में नहीं लगाना चाहिए। यह हमें चेतावनी देता है कि हमें अपनी सुरक्षा के लिए अपनी पहचान को भौतिक चीज़ों से नहीं जोड़ना चाहिए क्योंकि ऐसा करने से हमारा ध्यान सच्ची आंतरिक शांति पाने से भटक सकता है।

मिटी पई अतोलवी कोइ न होसी मितु ॥५७॥

जब शरीर पर मिट्टी का भारी बोझ पड़ता है तब कोई भी साथ देने वाला नहीं बचता। यह कड़वी सच्चाई मृत्यु के सामने अहंकार की कमज़ोरी को उजागर करती है और यह भी बताती है कि भौतिक रिश्ते कोई ठोस सहारा नहीं होते। (५७)

तत्त्व: शेख फ़रीद हमें याद दिलाते हैं कि अपनी सुरक्षा की भावना के लिए भौतिक चीज़ों पर निर्भर रहना और अपनी अहमियत को बाहरी पहचान से जोड़ना, हमें सच्ची आंतरिक शांति से दूर ले जा सकता है। सच्ची संतुष्टि भीतर से आती है न कि हमारी सांसारिक उपलब्धियों से। हमारा आत्म-मूल्य जितना ज़्यादा बाहरी प्रमाणों पर निर्भर होता है, खोने और तुलना करने का डर उतना ही बढ़ता है। वास्तविक संतोष तब उत्पन्न होता है जब चेतना, अंतरात्मा और आंतरिक सामंजस्य ही हमारे जीवन का आधार बनते हैं।

सबद व्याख्या विनइंदर कौर और अमरदीप सिंह

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com